● सुनो, समझो और पढ़ो :

१२. स्कूल चलो

– देवेंद्र कुमार

जन्म : १९ अगस्त १९४० दिल्ली **रचनाएँ :** एक छोटी बाँसुरी, खिलौने, पेड़ नहीं कट रहे हैं आदि **परिचय :** २७ वर्ष नंदन पत्रिका से जुड़े रहे । हिंदी अकादमी तथा बालसाहित्यकार के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित बाल उपन्यासकार, अनुवादक एवं कहानीकार रहे हैं ।
प्रस्तुत कहानी में लेखक ने शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए बताया है कि शिक्षा किसी भी उम्र में प्राप्त की जा सकती है ।

अध्ययन कौशल

संगणकीय शिष्टाचार ज्ञात करो और कक्षा में चर्चा करो ।

656146

आखिरी बच्चा भी रिक्शा से उतरकर चला गया । भरतू की ड्युटी खत्म हो गई थी लेकिन अभी पूरी तरह नहीं । साइकिल रिक्शा की सीट से उतरकर उसने पीछे झाँका तो अंदर एक किताब पड़ी दिखाई दी । अंदर का मतलब रिक्शा के पीछे एक कैबिन जुड़ा है, उसमें छोटे बच्चे बैठते हैं । भरतू ने बड़बड़ाते हुए किताब उठा ली और उलट-पलटकर देखने लगा । हर रोज ऐसा ही होता है । कोई-न-कोई बच्चा कुछ न कुछ भूल जाता है । रूमाल, पानी की बोतल या फिर किसी की कैप रह जाती है ।

वह जब भी किसी किताब को हाथ में उठाता है तो मन में एक चिढ़ होती है अपने लिए । आखिर वह अनपढ़ क्यों रह गया । पढ़-लिख जाता तो आज रिक्शा खींचने की जगह कोई ढंग का काम करता लेकिन ... अब इस सब को याद करने से क्या फायदा ?

रिक्शा को ढाबे के बाहर खड़ा करके भरतू खाना खाने बैठ गया । किताब अब भी उसके हाथ में थी । तभी आवाज सुनाई दी, ‘‘क्यों भरतू, स्कूल में दाखिला ले लिया क्या ?’’

भरतू ने चौंककर देखा, उसका साथी रमन हँसता हुआ किताब की ओर इशारा कर रहा था । भरतू लजा गया । बोला, ‘‘अरे, जब पढ़ने की उम्र थी तब नहीं पढ़ सका तो अब क्या पढ़ूँगा ।’’ फिर उसने बताया कि कोई बच्चा उसकी रिक्शागाड़ी में किताब भूल गया है ।

भरतू, रमन तथा और चार लोग एक किराए के कमरे में रहते हैं । सभी अपने-अपने गाँव से रोजगार की तलाश में शहर आए हैं । सभी के परिवार गाँव में हैं । वे उनको पैसे भेजते रहते हैं । रमन साक्षर है । भीम ऐप से वह सबके पैसे भेज दिया करता है । बीच-बीच में कुछ दिन के लिए घरवालों से मिलने गाँव जाते हैं । भरतू स्कूल के बच्चों को लाता-ले जाता है । उसके साथी सवारी ढोते हैं । वे लोग भरतू की रिक्शा को ‘चिड़ियाखाना’ कहते हैं पर भरतू ने उसका नाम रखा है –‘गुलदस्ता’ । जब बच्चों को लेकर रिक्शा चलाता है तो उसे सचमुच बहुत अच्छा लगता है । रह-रहकर अपने गाँव-घर की याद आती है । कभी-कभी लगता है, जैसे उसका बेटा नन्हा भी दूसरे बच्चों के साथ बैठा स्कूल जा रहा है ।

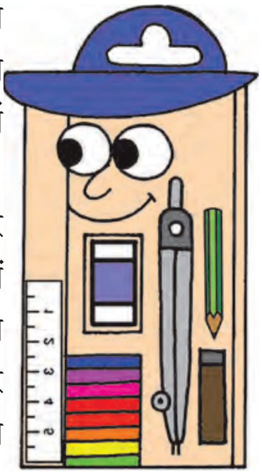

भरतू सब बच्चों के चेहरे पहचानता है पर उसे याद नहीं आ रहा था कि किताब किस बच्चे की थी । वैसे किताब पर नाम लिखा था पर भरतू को

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी के भाव एवं विचार स्पष्ट करें । उन्हें अपने विद्यालय की विशेषताएँ बताने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

बाल पत्रिका से कोई कहानी पढ़ो और परिपाठ में सुनाओ ।

पढ़ना कहाँ आता है । उस रात भरतू ने सपने में देखा, जैसे वह मैदान में बैठा है और उसके सामने एक लंबी–चौड़ी किताब खुली पड़ी है । तभी एक आवाज कानों में आती है । लाओ मेरी किताब फिर भरतू की नींद टूट गई । जागकर वह बहुत देर तक सपने के बारे में सोचता रहा ।

सुबह अपनी रिक्शा बाहर निकाली और बारी–बारी से बच्चों को लेने लगा । तभी रमेश नामक बच्चे ने कहा, ''मेरी किताब...?'' वह कुछ परेशान दिख रहा था । रमेश की माँ सरिता ने भी कहा, ''भरतू, जरा ध्यान से देखना, रमेश की किताब नहीं मिल रही है ।''

भरतू ने किताब उनकी ओर बढ़ा दी । तभी रमेश ने कहा, ''तुमने मेरी किताब फाड़ी तो नहीं । किताब फाड़ना बुरी बात है ।'' सुनकर भरतू हँस पड़ा । उसने कहा, ''नहीं भैया, मैंने तुम्हारी किताब खूब ध्यान से रखी थी । एकदम ठीक है, देख लो ।''

रमेश की माँ सरिता देवी भी हँस पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू जो बात मैं इसे समझाती हूँ, वही इसने तुमसे कह दी । बुरा न मानना ।''

सारा दिन भरतू उसी किताब के बारे में सोचता रहा । दोपहर में रमेश को उसके घर के बाहर छोड़ते हुए भरतू ने कहा, ''क्यों भैया, जो तुम पढ़ते हो, मुझे भी पढ़ा दो ।'' ''मैं क्या टीचर हूँ जो तुम्हें पढ़ाऊँ ?'' रमेश बोला । ''मेरे टीचर बन जाओ न रमेश भैया । जो फीस माँगोगे दूँगा,'' भरतू ने हँसकर कहा । ''ठीक है, कल पढ़ाऊँगा ।'' ''क्या पढ़ाओगे ?''

''ए, बी .... पढ़ाऊँगा ।'' कहकर रमेश माँ के साथ घर में चला गया । भरतू मुसकराया तो सरिता देवी भी हँस पड़ीं ।

अगले दिन रमेश ने भरतू से कहा, ''भरतू भैया, आज मैं तुम्हारे लिए ए और बी लाया हूँ ।'' और उसने बस्ते से निकालकर एक सेब और गेंद भरतू के हाथ में थमा दी । भरतू कुछ पूछता, इससे पहले रमेश ने कहा, ''देखो ए से एप्पल, बी से बॉल ।''

भरतू ने कहा, ''रमेश भैया, क्या रोज ऐसे ही पढ़ाओगे ?''

रमेश ने कहा, ''हाँ '' और माँ के साथ घर में दौड़ गया । भरतू सेब और गेंद को हाथ में लिए खड़ा रह गया । उसने सोचा, कल दोनों चीजें वापस कर देगा । उस रात देर तक ए और बी से खेलते रहे भरतू और उसके साथी । उनके बीच देर तक गेंद और सेब इधर से उधर उछलते रहे । कमरे में हँसी गूँजती रही । शायद इससे पहले ये लोग इतना कभी नहीं हँसे थे । भरतू के साथी पूछते रहे, ''भरतू कल अपने मास्टर जी से क्या पढ़ेगा ?''

अगली सुबह रमेश के घर के बाहर पहुँचकर भरतू ने रिक्शा की घंटी बजाई । कुछ देर तक कोई जवाब नहीं मिला फिर रमेश की माँ सरिता देवी बाहर निकलकर आईं । उन्होंने कहा, ''रमेश आज स्कूल नहीं जाएगा । उसे रात से बुखार आ रहा है ।''

सुनकर भरतू को एक झटका-सा लगा । वह बाकी बच्चों को स्कूल पहुँचाने चला गया । उस दोपहर वह गुमसुम रहा । ठीक से खाना भी नहीं खाया भरतू ने । रमन बार–बार पूछता रहा, ''भरतू, क्या बात है ?'' पर भरतू ने कुछ नहीं कहा ।

❑ कहानी में आए उनकी पसंद के सबसे सुंदर प्रसंग बताने के लिए कहें । पसंद के कारण पूछें । उनके शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रेरित करें । कहानी में आए भूत, वर्तमान और भविष्यकाल के एक–एक वाक्य खोजकर लिखने के लिए कहें ।

स्वयं अध्ययन

किसी शालेय समारोह के कार्यक्रम में अध्यक्ष जी के परिचय देने हेतु जानकारी तैयार करे ।

नाम — जन्मस्थान — शिक्षा — कार्यक्षेत्र — विशेषताएँ — प्राप्त पुरस्कार

इसके बाद वाली सुबह को रमेश के दरवाजे पर पहुँचकर उसने घंटी बजाई तो रमेश की माँ बाहर आईं । ''भरतू, रमेश की तबीयत आज भी ठीक नहीं है । शायद एक-दो दिन और वह स्कूल न जा सकेगा ।''

भरतू के हाथ में ए और बी यानी सेब और गेंद थे । उसने सरिता देवी से कहा, ''ये दोनों मेरे मास्टर जी को दे देना, मैडम जी । अब तो मुझे पढ़ाएँगे नहीं ।''

सरिता देवी आश्चर्य से मुरझाए सेब और गेंद को देखती रहीं । फिर भरतू ने उन्हें सब बताया तो उनके चेहरे पर फीकी मुसकान आ गई । लेकिन भरतू हँस न सका । उसने स्कूल वाली रिक्शा आगे बढ़ा दी ।

उस दोपहर भरतू ढाबे पर नहीं आया । वह रमेश के घर के बाहर जा खड़ा हुआ । आसपास कोई न था । वह कुछ देर तक धूप में खड़ा रहा, फिर झिझकते हुए दरवाजे पर लगी घंटी बजा दी । कुछ पल ऐसे ही बीत गए । उसे दोबारा घंटी बजाना ठीक न लगा । न जाने रमेश की माँ क्या सोचने लगे । उसका मन रमेश से मिलना चाहता था पर संकोच भी था । वह वापस मुड़ने लगा, तभी दरवाजा जरा-सा खोलकर सरिता देवी ने बाहर झाँका । भरतू को देखकर वह चौंक पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, तुम इस समय कैसे ? क्या चाहिए ?''

भरतू सकपका गया । हकलाता-सा बोला, ''जी, मैंने सोचा अपने मास्टर जी को देख लूँ, उनकी तबीयत कैसी है ?''

मास्टर जी शब्द पर सरिता देवी हँस पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, तुम्हारे मास्टर जी की तबीयत अब ठीक है । आओ, अंदर आ जाओ, धूप में क्यों खड़े हो ?'' यह कहकर उन्होंने दरवाजा पूरा खोल दिया । भरतू को लग रहा था, इस समय आना शायद ठीक नहीं रहा पर अब वापस नहीं लौटा जा सकता था । वह झिझकते कदमों से अंदर घुस गया । ''आओ भरतू, यहाँ आओ,'' कहते हुए सरिता देवी ने एक कमरे में आने का इशारा किया ।

भरतू ने कहा, ''मैडम जी, अब आपने बता दिया न कि हमारे मास्टर जी ठीक हैं । बस अब जाता हूँ । आप तकलीफ न करें ।''

''नहीं, नहीं, तकलीफ कैसी ! तुम अपने मास्टर जी से मिलने आए हो तो क्या बिना मिले चले जाओगे ? आ जाओ । इतना घबरा क्यों रहे हो ?''

''कैसे हो मास्टर जी ?'' कहते-कहते भरतू हँस पड़ा, उसने देखा, सेब और गेंद पलंग पर रमेश के पास रखे थे । ''मैं ठीक हूँ ।'' रमेश ने कहा, फिर बोला, ''तुमने ए, बी माँ को लौटा दिए । ऐसे कैसे पढ़ोगे ! लो, ले जाओ और ध्यान से याद करो । तभी तो आगे पढ़ाऊँगा तुम्हें ।''

''भरतू, खड़े क्यों हो ? बैठ जाओ ।'' सरिता देवी ने कहा । उनके हाथ में पानी का गिलास और प्लेट में कुछ नाश्ता था ।

भरतू जमीन पर ही बैठ गया । सरिता ने कहा, ''वहाँ जमीन पर नहीं, कुरसी पर आराम से बैठो ।''

''जी, मैं यहीं ठीक हूँ ।'' भरतू ने कहा और उठ खड़ा हुआ । उसने कुछ खाया नहीं । ''मास्टर जी जल्दी ठीक हो जाओ, फिर आगे पढ़ाना ।'' कहकर सेब और गेंद रमेश के हाथ से ले ली और बाहर निकल आया ।

- कहानी के अनुसार भरतू के स्वभाव का वर्णन कहलवाएँ । कहानी में आए विशेषण शब्दों की पहचान करवाएँ । पाठ में आए किन्हीं दस शब्दों के समानार्थी, विरूद्धार्थी शब्द लिखवाएँ तथा उनका अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करवाएँ ।

बताओ तो सही

अंत में रमेश के घर से 'वापस आने पर भरतू के मन की भावनाएँ', बताओ ।

रमेश की तबीयत ठीक देखकर उसका मन खुश हो गया था । एक बार मन में आया था कि हौले से रमेश का सिर सहला दे पर हिम्मत न हुई । बाहर निकलते हुए सरिता देवी की आवाज सुनाई दी, ''भरतू, कल रमेश को लेने आ जाना, अब इसकी तबीयत ठीक है ।''

अगली सुबह रमेश माँ के साथ घर से बाहर खड़ा मिला । भरतू से नजरें मिलते ही रमेश और उसकी माँ मुसकरा दिए । भरतू भी हँस दिया ।

दोपहर को रमेश को घर छोड़ने आया तो सरिता देवी ने कहा, ''भरतू, शाम को पाँच बजे आना । आ सकोगे ? बहुत काम तो नहीं रहता ?''

''जी आ जाऊँगा,'' भरतू ने कहा और ढाबे पर जा बैठा । मन प्रसन्न था । रमन ने पुकारा, ''क्यों भरतू, पढ़ाई कैसी चल रही है ?''

''बहुत बढ़िया ।'' भरतू ने कहा और हँस दिया ।

भरतू पाँच बजे रमेश के घर के बाहर पहुँच गया । कुछ देर बिना घंटी बजाए सोच में डूबा खड़ा रहा । मन में कुछ डर था । न जाने रमेश की माँ ने क्यों बुलाया है ?

कुछ देर बाद उसने घंटी बजा ही दी । दरवाजा रमेश ने खोला उसे देखते ही हँस पड़ा । बोला, ''आओ भरतू, आओ, अंदर चलो,'' कहकर रमेश ने भरतू का हाथ पकड़ लिया और उसी कमरे में ले गया ।

सरिता देवी कुरसी पर बैठी थीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, यहाँ बैठो । रमेश बता रहा था, तुम पढ़ना चाहते हो ? अगर ऐसा है तो बहुत अच्छी बात है ।'' भरतू लजा गया । बोला, ''मैडम जी, यह तो मैंने यूँ ही मजाक में कह दिया था । भला अब क्या पढ़ूँगा मैं । हाँ, गाँव के स्कूल में मेरा बेटा नन्हा जरूर पढ़ता है ।''

''भरतू, तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं ?'' सरिता देवी ने पूछा । भरतू उन्हें अपने गाँव-घर की बातें बताने लगा । न जाने क्या-क्या बता गया फिर एकाएक रुक गया । बोला, ''माफ करना मैडम जी, मैं तो यूँ ही कह रहा था । भला ये भी कोई बताने की बातें हैं ।''

''अरे नहीं-नहीं, मुझे तो तुम्हारी बातें सुनकर बहुत अच्छा लगा और बताओ । असल में मैं तो कभी गाँव गई नहीं । वहाँ लोग कैसे रहते हैं, क्या करते हैं, केवल किताबों से पता चलता है या फिल्मों से ।''

भरतू उठने को हुआ पर सरिता देवी ने रोक लिया । बोली, ''मैंने जिस बात के लिए बुलाया था, वह तो अभी कही ही नहीं । तुम पढ़ना चाहते हो, सुनकर मुझे अच्छा लगा । रमेश के पापा को भी पसंद आई यह बात ।''

''मैडम जी, वह तो मैंने ऐसे ही हँसी में कह दी थीं,'' भरतू ने संकोच से कहा ।

''नहीं, इसमे संकोच कैसा ? अगर तुम चाहो तो शाम को पाँच बजे रोज आ सकते हो । मैं पढ़ाऊँगी तुम्हें । शादी से पहले मैं बच्चों को पढ़ाया करती थी । अब भी मन करता है कोई ऐसा काम करने का ।''

''पर भरतू तो बड़ा है माँ,'' रमेश ने कहा । ''पहले बच्चों को पढ़ाती थी तो अब बड़ों को पढ़ाऊँगी । भरतू से ही शुरू होगा यह मेरा स्कूल ।''

''तो क्या मुझे आप सचमुच पढ़ाएँगी ?'' भरतू ने पूछा । उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था ।

''हाँ भरतू, मैं सच कह रही हूँ । जिस दिन मुझे कोई काम नहीं होगा तो मैं तुम्हें बता दूँगी, जब तुम रमेश को छोड़ने आओगे । उस दिन तुम पढ़ने आ जाना ।''

बाहर निकलने से पहले रमेश के सिर पर हाथ रखने से खुद को नहीं रोक पाया भरतू । ऐसा करते समय उसकी आँखें भीग गईं ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

दाखिला = प्रवेश

सकपकाना = डरना

हकलाना =रुकरुक कर बोलना

विचार मंथन

।। मुट्ठी में है तकदीर हमारी ।।

खोजबीन

ओलंपिक स्पर्धा संबंधी जानकारी प्राप्त करो :

- कब से प्रारंभ
- प्रतीक चिह्न और अर्थ
- किन-किन देशों में आयोजन ?
- अगली बार कहाँ होने वाला है ?
- ओलंपिक में पदक पाने वाले भारतीय

मेरी कलम से

मुद्दों के आधार पर कहानी लिखो :

- जंगल में पेड़ के नीचे चूहों का अपने राजासहित निवास ।
- राजा द्वारा चूहों को हमेशा दया, परोपकार की सलाह ।
- हाथियों का झुंड पानी की खोज में पेड़ के पास आना, चूहों को तकलीफ पहुँचाना ।
- चूहों की राजा से रक्षा की माँग ।
- चूहा राजा का हाथियों के सरदार से मिलना और हाथी सरदार का माफी माँगना ।
- चूहा राजा द्वारा हाथी को पानी की जगह दिखाना ।
- हाथियों का शिकार करने शिकारी का आना, हाथियों का जाल में फँसना ।
- हाथियों का संदेश चिड़िया द्वारा चूहा राजा को पहुँचाना ।
- चूहा राजा का चूहों को सहायता करने भेजना ।
- चूहों का जाल काटना ।
- सीख और शीर्षक

✲ **पाठ के आधार पर ५-६ पंक्तियों में उत्तर लिखो :**

(क) भरतू किताब उठाने पर मन में क्यों चिढ़ा ?

(ख) सरिता देवी की हँसी का क्या कारण था ?

(ग) भरतू और उसके साथी रात देर तक कौन-सा खेल खेलते रहे ?

(घ) भरतू रमेश के घर के बाहर किसलिए खड़ा था ?

(च) सरिता देवी ने कौन-सी बात तय की ?

(छ) भरतू, रमन आदि बीच-बीच में गाँव किनसे मिलने जाते ?

सदैव ध्यान में रखो

कभी भी किसी का मन टूटने न देना ।

भाषा की ओर

वर्णों एवं शब्दों के मेल को देखो, पढ़ो और समझो :

१. **महर्षि** ध्यानमग्न बैठे थे ।
२. कन्याकुमारी का **भानूदय** अप्रतिम होता है ।
३. राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा **प्रत्येक** का कर्तव्य है ।

महा + ऋषि = आ + ऋ
भानु + उदय = उ + उ
प्रति + एक = इ + ए

→ **स्वर संधि**

१. रोगी को **तत्काल** भर्ती कराया गया ।
२. प्रतिज्ञा में एकात्मता का **उल्लेख** है ।
३. दिया हुआ **अनुच्छेद** पढ़ो ।

तत् + काल = त् + का
उत् + लेख = त् + ल
अनु + छेद = उ + छे

→ **व्यंजन संधि**

१. हमें दुराचार से बचना चाहिए ।
२. केवल **मनोरथ** से ही काम नहीं बनता ।
३. मैंने पढ़ने का **निश्चय** किया है ।
४. मित्र को चोट पहुँचाकर उसे बहुत **मनस्ताप** हुआ ।

दुः + आचार = विसर्ग (ः) का र्
मन ः + रथ = विसर्ग (ः) का ओ
नि ः + चय = विसर्ग (ः) का श्
मन ः + ताप = विसर्ग (ः) का स्

→ **विसर्ग संधि**

संधि के भेद → स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि

संधि-ध्वनियों का मेल →	ध्वनि + ध्वनि	=	नया रूप
हिम + आलय →	हिम् + (अ) + (आ) लय	=	हिमालय
	अ + आ	=	आ

संधि में दो ध्वनियाँ निकट आने पर आपस में मिल जाती हैं और एक नया रूप धारण कर लेती हैं ।

उपरोक्त उदाहरणों में (१) में महा+ऋषि, भानु+उदय, प्रति+एक शब्दों में **दो स्वरों** के मेल से जो परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **स्वर संधि** हुई । उदाहरण (२) में तत्+काल, उत्+लेख, अनु+छेद शब्दों में व्यंजन ध्वनि के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **व्यंजन संधि** हुई । उदाहरण (३) में विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन हुआ है । अतः यहाँ **विसर्ग संधि** हुई ।